SNBP International & Senior Secondary School, Chikhali, Pune.
Affiliation No. 1130703
Academic session 2023-24

Worksheet -10

NAME:_____ **SUBJECT: HINDI**

CLASS 7 DIV :_____ **व्याकरण Ls.-19,20 क्रिया और काल**

Prepared By: Suman Yadav **Given date -**

Prepared date - 28 / 12/2024

क्रिया - किसी कार्य का होना या करना क्रिया कहलाता हैं | धातु - क्रिया का मूल रूप धातु' कहलाता है। इनके साथ कुछ जोड़कर क्रिया के सामान्य रूप बनते हैं।

जैसे- बोलना, पढ़ना आदि।

क्रिया के भेद - कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

१) सकर्मक क्रिया २) अकर्मक क्रिया।

वाक्य में क्रिया के होने के समय कर्ता का प्रभाव अथवा फल जिस व्यक्ति अथवा वस्तु पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं, जैसे नेहा(कर्ता) दूध पी(कर्म) रही है।(क्रिया)

१) **सकर्मक क्रिया -** जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे- लड़की पत्र लिख रही है।

सकर्मक क्रियाओं के दो भेद हैं- **(i)** एककर्मक क्रिया **(ii)** द्विकर्मक क्रिया

(i) एककर्मक क्रिया - जिन सकर्मक क्रियाओं में केवल एक ही कर्म होता है, वे एककर्मक सकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे-नेहा झाड़ू लगा रही है।

(ii) द्विकर्मक क्रिया - जिन सकर्मक क्रियाओं में एक साथ दो-दो कर्म होते हैं, वे द्विकर्मक सकर्मक क्रिया कहलाते हैं; जैसे-ओजस्व अपने भाई के साथ क्रिकेट खेल रहा है।

२) **अकर्मक क्रिया -** जिस क्रिया में कर्म नहीं पाया जाता है। वह अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे-प्रणव इंजीनियर है।

संरचना के आधार पर क्रिया के भेद - संरचना के आधार पर क्रिया के चार भेद होते हैं

१) संयुक्त क्रिया २) नामधातु क्रिया ३) प्रेरणार्थक क्रिया ४) पूर्वकालिक क्रिया।१)

संयुक्त क्रिया - दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर जब किसी एक पूर्ण क्रिया का बोध कराती हैं, तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे-बच्चे दिनभर खेलते रहते हैं।

२) **नामधातु क्रिया -** संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि शब्दों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया

कहते हैं; जैसे-बात से बतियाना, अपना से अपनाना, नरम से नरमाना।

३) **प्रेरणार्थक क्रिया -** जिस क्रिया को कर्ता स्वयं न करके दूसरों को करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। प्रेरणार्थक क्रिया में दो कर्ता होते हैं।

- प्रेरक कर्ता-प्रेरणा देने वाला, जैसे-मालिक, अध्यापिका आदि।
- प्रेरित कर्ता-प्रेरित होने वाला अर्थात जिसे प्रेरणा दी जा रही है; जैसे-नौकर, छात्र आदि।

प्रेरणार्थक क्रिया के दो रूप हैं।

१) प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया २) वितीय प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया प्रत्यक्ष होती है तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया अप्रत्यक्ष होती है।

४) **पूर्वकालिक क्रिया -** जिस वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले यदि कोई क्रिया आ जाए, तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती हैं।

काल

काल का अर्थ है- समय। क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो उसे काल कहते हैं।

काल के भेद - काल के तीन भेद होते हैं।

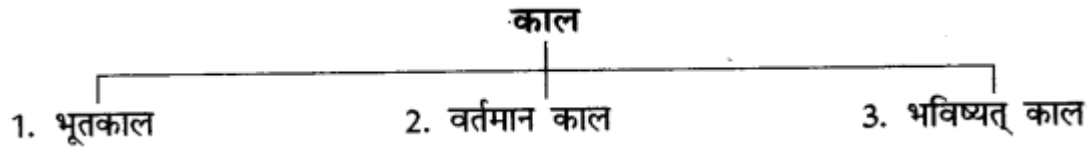

१) **भूतकाल -** क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय का बोध हो, वह भूतकाल कहलाता है; जैसे

नेहा ने गीत गाया। तुमने पुस्तक पढ़ी।

भूतकाल के भेद - भूतकाल के छह भेद होते हैं।

१) सामान्य भूतकाल २) आसन्न भूतकाल ३) पूर्ण भूतकाल

४)अपूर्ण भूतकाल ५) संदिग्ध भूतकाल ६)हेतु-हेतुमद भूतकाल

१) सामान्य भूतकाल - क्रिया के जिस रूप से काम के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का बोध हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं। जैसे-अंशु ने नृत्य किया। श्रीराम ने रावण को मारा।

२) आसन्न भूतकाल - क्रिया के जिस रूप से उसके अभी-अभी पूरा होने का पता चले, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। जैसे -मोहन विद्यालय गया है। , मैं अभी सोकर उठी हूँ।

आसन्न का अर्थ 'निकट' होता है। आसन्न भूतकाल की क्रिया में हूँ, हैं, है, हो लगता है।

३) पूर्ण भूतकाल - क्रिया के जिस रूप से उसके बहुत पहले पूर्ण हो जाने का पता चलता है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। जैसे-अंग्रेजों ने भारत पर राज किया था। वर्षा रुक गई थी।

४)अपूर्ण भूतकाल - क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में समाप्त होने का पता न चले। जैसे-वर्षा हो

रही थी। फुटबॉल मैच चल रहा था।
(५) संदिग्ध भूतकाल - भूतकाल की क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में पूरा होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। जैसे–वह घर गया होगा। बस छूट गई होगी।
(६) हेतु-हेतुमद भूतकाल - जहाँ भूतकाल की एक क्रिया दूसरे पर आश्रित हो, वहाँ हेतुहेतुमद् भूतकाल होता है। जैसे–यदि वर्षा होती तो फ़सल अच्छी होती। **2.**
वर्तमान काल - वर्तमानकाल अर्थात वह समय जो चल रहा है। क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने का पती । चले, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे-पिता जी समाचार सुन रहे हैं। छात्र पढ़ रहे हैं।
वर्तमान काल के तीन उपभेद हैं– सामान्य वर्तमान अपूर्ण वर्तमान संदिग्ध वर्तमान
(i) **सामान्य वर्तमान काल -** जो क्रिया वर्तमान में सामान्य रूप से होती है। वह सामान्य वर्तमान काल की क्रिया कहलाती है। जैसे - दादी माला जपती है। , बच्चा दूध पीता है।
(ii) **अपूर्ण वर्तमान काल** - क्रिया के जिस रूप से जाना जाए कि काम अभी चल रहा है, उसे अपूर्ण वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे नेहा पढ़ रही है। , वह सो रही है।
(iii) **संदिग्ध वर्तमान काल** - क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में होने में संदेह का बोध हो, वह संदिग्ध वर्तमान काल कहलाता है; जैसे - नेहा आ रही होगी।
3. भविष्यत् काल - क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य ढंग से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे -ओजस्व अपना जन्मदिन मनाएगा।
भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं १) सामान्य भविष्यत् काल २)संभाव्य भविष्यत् काल
(i) **सामान्य भविष्यत् काल -** जहाँ साधारण रूप से क्रिया के भविष्यत् काल में होने या न होने का बोध हो। वह सामान्य भविष्यत् काल कहलाता है; जैसे अमर अखबार बेचेगा।, हम खेलने जाएँगे।
(ii) **संभाव्य भविष्यत् काल** - क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चलता है, उसे संभाव्य भविष्यत काल कहते हैं; जैसे - शायद वह पास हो जाए।

प्रश्न १) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्द छाँटकर उसके भेद लिखिए |
१) हरीश फुटबॉल खेलता है। २) मनीषा खाना पकाती है।
३) आतंकी गाडी चलाता है। ४) पुष्प कलि को बुलाता है।

प्रश्न २)निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया छाँटकर उसका काल और भेद बताइए -

1 रिया नागपूर से संतरे लाएगी | 2 शायद मेरे मित्र फुटबाल मैच खेलें |

3 मोहन खेल प्रतियोगिता मे भाग लेगा | 4 सैनिक देश की रक्षा करते हैं |

5 दादी कहानी सुना रही हैं | 6 नाटक शुरू हो गई होगी |

SUB.TEACHER HOD CO ORDINATOR PRINCIPAL